मार्च 2020

सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 33 अष्टम् अंक

इस अंक में...

5 सम्पादकीय

विशेष स्तम्भ

7 समसामयिक सामान्य ज्ञान
13 आर्थिक परिदृश्य
19 राष्ट्रीय परिदृश्य
17 भारत में वन क्षेत्र में वृद्धि : वन स्थिति रिपोर्ट (2019)
23 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
31 क्रीड़ा जगत्
34 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
35 युवा प्रतिभा
36 सारभूत तत्व कोष
39 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
42 राजस्थान : वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान

लेख

44 योजना क्रियान्वयन सम्बन्धी लेख—अन्तर्राज्यीय परिषद्-क्षेत्रीय परिषदें
46 वैधानिक लेख—नागरिकता संशोधन अधिनियम एवं एनआरसी
47 औद्योगिक लेख—कृषि आधारित उद्योग : एक अवलोकन
50 समसामयिक अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीतिक लेख—मध्यम रेंज परमाणु बल संधि को लेकर अमरीका-रूस विवाद
52 प्रौद्योगिकी लेख—कम्प्यूटिंग का सिरमौर : क्वांटम

हल प्रश्न-पत्र

54 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी (10+2) स्तरीय (प्रथम चरण) परीक्षा, 2018
62 आर.पी.एफ./ आर.पी.एस.एफ. सब-इंस्पेक्टर (एक्जीक्यूटिव) कम्प्यूटर आधारित परीक्षा, 2018
71 बिहार पुलिस सब-इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा, 2019
76 हरियाणा क्लर्क परीक्षा, 2019
81 रेलवे रिक्रूटमेण्ट बोर्ड लेवल-1 ग्रुप 'डी' कम्प्यूटर आधारित परीक्षा, 2018
89 आगामी उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. खण्ड शिक्षा अधिकारी (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
98 आगामी राजस्थान पुलिस कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
108 आगामी राजस्थान पटवार भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
116 आगामी बिहार अमीन कम्प्यूटर आधारित परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
120 आगामी डी.आर.डी.ओ. मल्टी टास्किंग स्टाफ भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
128 क्या आप परिचित हैं ?
129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

सब कुछ पाने की इच्छा न करें

एक स्वर्ण मछली से वरदान प्राप्त करके एक किसान ने जीवन की प्रायः समस्त आवश्यक वस्तुएँ तथा सुख-सुविधा के अनेक साधन प्राप्त कर लिए, परन्तु उसका मन नहीं माना. उसने सोचा कितना अच्छा हो यदि संसार में उपलब्ध समस्त वस्तुएँ एकमात्र मेरे ही अधीन हो जाएं. वह स्वर्ण मछली के पास पहुँचा और उसने स्वर्ण मछली से उक्त वरदान की याचना की. स्वर्ण मछली ने उसको पूर्ववत् एक निर्धन किसान बना दिया.

किसान से सम्बन्धित उक्त आख्यान का निष्कर्ष स्पष्ट है. वासनाओं पर लगाम न लगा सकने के कारण व्यक्ति को पतन का रास्ता देखना ही पड़ता है. जो लोग इस जीवन सूत्र को याद नहीं रखते हैं कि–कभी किसी को मुकम्मिल जहाँ नहीं मिलता है–वे अपनी प्रस्तुत उपलब्धियों से भी हाथ धो बैठते हैं. हमारे कर्णधारों के उदाहरण प्रमाण हैं. भगवान ने उनको उच्च पद पर प्रतिष्ठित किया, मोटे वेतन का अधिकारी बनाया, नौकर-चाकर, कार-कोठी आदि की सुविधाएँ प्रदान कर दीं, परन्तु उनका मन नहीं भरा, वे अपनी वासनाओं पर लगाम नहीं लगा सके और भ्रष्टाचार एवं घोटालों की दुनिया में पहुँच गए. आखिर क्यों ? एक ही उत्तर है– ''मेरा पेट हाऊ और मैं न देउँ काऊ'' परिणाम वही जो किसान को भोगना पड़ा. देने वाले को खीझ हो गई. उसने पल भर में उनकी दुनिया बदल दी. मान, मर्यादा, धन, सम्पत्ति, वैभव सब कुछ धरे रह गए और अपराधियों की भाँति कटघरे में खड़े होने के लिए अथवा सींखचों के पीछे जाने के लिए विवश हो गए. जय-जयकार की जगह थू-थू होने लगी.

जिस प्रकार जीवन के सम्यक् निर्वाह के लिए जीवन को एक सुनिश्चित दिशा देना आवश्यक होता है, उसी प्रकार जीवन की उपलब्धियों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति अपनी वासनाओं एवं इच्छाओं पर नियंत्रण कर सके और मिल-बाँट कर खाने में प्रसन्नता का अनुभव करे, परन्तु हम ऐसा नहीं करते हैं. यही कारण है कि हम न तो अपनी उपलब्धियों द्वारा सम्यक् रूपेण लाभान्वित हो पाते हैं और न उनको स्थायित्व प्रदान कर पाते हैं. इस प्रवृत्ति से उत्पन्न जीवन की आपा-धापी, गलाकाट प्रतियोगिता एवं सर्वभक्षी जीवन-पद्धति ने हमको अर्थ पिशाच एवं कामांध नर-पशु की कोटियों में खड़ा कर दिया है तथा मानवीय मूल्यों के प्रति हमारा किसी प्रकार का लगाव नहीं रह गया है. सन्त तिरुवल्लुवर ने हमको यह श्रेष्ठ परामर्श दिया है, कि हम यदि साधनों का ध्यान रखकर ठीक प्रकार काम करेंगे, तो सफलता अवश्य मिलेगी. कहने की आवश्यकता नहीं है कि अनेक प्रतियोगी केवल इस कारण सफलता का वरण नहीं कर पाते हैं; क्योंकि वे अपने लक्ष्य को निर्धारित करते समय उपलब्ध साधनों पर विचार नहीं करते हैं. हमें अपनी सामर्थ्य के अनुसार साधन जुटाने पर विचार करें और उनके परिप्रेक्ष्य में अपने प्राप्तव्य निर्धारित करने पर विचार करना चाहिए.

हमारा लक्ष्य सह अस्तित्व मात्र न होकर सहजीवन होना चाहिए. हमारे विचार से सह अस्तित्व पर केन्द्रित विचारधारा ने हमें अन्य प्राणियों के योग-क्षेत्र के प्रति उदासीन ही नहीं, बल्कि पूर्णतः स्वार्थबद्ध भी बना दिया है.

पेटू व्यक्ति अधिकतम भोजन करना चाहता है, जिससे वह इस सन्तोष की अनुभूति कर सके कि उसने अन्य व्यक्ति के हिस्से के भोजन का भी उपभोग कर लिया है. प्रचलित प्रवाद के अनुसार गधे को वैशाखनन्दन कहते हैं, क्योंकि चारों ओर सूखी भूमि देखकर वह इस संतोष की अनुभूति करता है कि उसने सब घास उदरस्थ कर ली है. उच्चतम स्तर पर यह प्रवृत्ति आर्थिक शोषण के रूप में दिखाई देती है. यही प्रवृत्ति भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती आदि. समाज विरोधी दुष्कृत्यों को जन्म देती है. हम प्रायः भूल जाते हैं कि जो लोग आवश्यकता से अधिक भोजन करते हैं, वे प्रायः अजीर्ण आदि उदर-रोगों से ग्रसित बने रहते हैं और शायद ही कभी स्वास्थ्य का सुख-भोग कर पाते हैं. पैन (PENN) नामक विद्वान ने ठीक ही लिखा है कि *Always rise from the table with an appetite, and you will never sit down without one.* जो व्यक्ति सब कुछ हड़प लेने में प्रयत्नशील बने रहते हैं, वे सदैव आशंका भय एवं दुराव-छिपाव का जीवन व्यतीत करने को विवश होते हैं, क्योंकि उनकी उपलब्धियाँ श्रम की सुदृढ़ शिला पर स्थापित नहीं होती हैं.

तर्क हो सकता है–क्या हमें महत्वाकांक्षी नहीं होना चाहिए ? परन्तु महत्वाकांक्षी होने का अर्थ अन्य व्यक्तियों के प्राप्तव्य को हड़प कर लेना अथवा अवांछित मार्ग पर चलकर संग्रह करना तो नहीं होना चाहिए. जोसेफ कौनरेड ने एक स्थान पर लिखा है कि वे ही महत्वाकांक्षाएं वैध एवं उचित हैं जो हमें अन्य व्यक्तियों के दुःखों, अभावों एवं भोलेपन की सीढ़ियों पर ऊपर की ओर नहीं ले जाती हैं. क्या वे प्रतियोगी वास्तव में सफल कहे जा सकेंगे, जो अपने साथियों की उत्तर-पुस्तकों को नष्ट करने-कराने का प्रयत्न करते हैं ? हमें एक महापुरुष के ये शब्द याद रखने चाहिए, जहाँ भी अन्याय, उदासीनता एवं असंयम का समावेश हो जाता है, वहाँ पतन और पराजय में परिणति अवश्यम्भावी है. भाग्य का निर्माण श्रम-सीकर के जल एवं सद्भावना की वायु द्वारा होता है. जो व्यक्ति शोषण के रक्त द्वारा भाग्य के पादप को सींचते हैं. आहों की हवा द्वारा उसे पल्लवित करने का प्रयत्न करते हैं, वे अन्ततः दण्ड एवं अपमान के भागी बनते हैं. प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या, हाथ कंगन को आरसी क्या ?

महत्वाकांक्षा का सम्बन्ध अपने विकास एवं अपनी प्रगति के साथ रहता है, न कि धन-सम्पत्ति के संचय के साथ. हमारे पास जो कुछ है, उससे हम सन्तुष्ट हों, हम जो कुछ हैं, उससे सन्तुष्ट न हों. इस कथन के अनुसार जीवन को ढालने में प्रयत्नशील व्यक्ति को कभी भी पराजय और पतन का मुँह नहीं देखना पड़ता है. इतिहास उन व्यक्तियों की चर्चा भी नहीं करता है जो येन-केन प्रकारेण धन-सम्पत्ति के संग्रह में अपना जीवन व्यतीत कर देते हैं. महत्वाकांक्षा की सिद्धि त्याग एवं तपस्या की अपेक्षा करती है. संग्रह में प्रवृत्त व्यक्ति यदि यह जान सके कि अब उसके पास पर्याप्त धन हो गया है, तो वह अतिचार की ओर नहीं जाएगा. यदि व्यक्ति यह जानता है कि ''कब रुक जाना चाहिए'', तो उसको लज्जा एवं अपमान का सामना नहीं करना पड़ता है. हम जीवन में धन-सम्पत्ति का अर्जन अवश्य करें, परन्तु यह ध्यान रखें कि अन्य व्यक्तियों को भी उसकी आवश्यकता है और उसको अर्जित करने का अधिकार उनको भी प्राप्त है जो लोग मात्र परिग्रह में जीवन को खपाते रहते हैं, उनको लक्ष्य करके महावीर स्वामी ने कहा है कि–अर्थ, अनर्थों का मूल है. चिन्तारूपी सैकड़ों ही सघन और विस्तीर्ण परिग्रह के वृक्ष की शाखाएँ हैं.

जिस समाज से हम सब कुछ प्राप्त करते हैं, उसका ऋण चुकाने का प्रयत्न हमें अवश्य करना चाहिए. ऐसा सोच रखने वाला व्यक्ति जीवन में निरन्तर आगे की ओर बढ़ता जाता है–पूर्व स्थिति को प्राप्त होकर दुःख एवं अपमान भोगने की आशंका उसको नहीं सताती है.

●●●